प्र.1. किसने किससे कहा अथवा सोचा । 30

उदा. ``तू इस कष्ट को सहर्ष स्वीकार करेगा न !'' 30

उत्तर स्कन्दकाचार्य नें बालमुनि से कहा । 291

पृष्ठ क्र.

1) ``धर्म से ही स्वर्ग और मोक्ष की प्राप्ति होती है ।''

आर्द्रकुमार मुनि ने 500 सामंतों से कहा 271

2) ``जिसे सच्चे आत्महित की चाह है, उसे संसार के क्षणिक सुखों का त्याग करना चाहिये ।''

कालक ने बहिन सरस्वती से कहा। 187

3) ``कर्म के फल को कोई बदल नहीं सकता है ।''

धन्यकुमार ने सोचा 57

4) ``मेरी आत्मा की कैसी दुर्दशा होगी ?''

मधुराजा ने पश्चाताप करते हुए कहा। 221

5) ``जिसे मोक्ष की लगन लगी हो उसके लिए संयम के कष्ट कुछ भी नहीं है ।''

शालिभद्र ने माँ (भद्रा) से कहा। 83

6) ``भूल को स्वीकार कर लेना, यह महात्मा बनने का लक्षण है ।''

मुनि भगवंत ने दृढ़प्रहारी से कहा। 276

7) ``निजी स्वार्थ के लिए दूसरे जीवों को मौत के घाट नहीं उतारना चाहिए ।''

आचार्य प्रभव स्वामी ने आर्य शय्यंभव से कहा 179

8) ``पवित्र चारित्र का त्याग कर यह विष की विष्टा को पाना चाहता है ।''

धर्मरुचि आचार्य भगवंत ने सोचा। 297

9) ``देह क्षणिक है, आत्मा शाश्वत है ।''

माँ रुद्रसोमा ने पुत्र आर्यरक्षित से कहा 125

10) ``पिता का आदर करना ही उचित है ।''

नारदजी ने प्रद्युम्न से कहा। | 239

11) ``स्नेह के बन्धनों को तोडकर पुत्र के आत्महित की चिन्ता कर रही है ।''

तोसलीपुत्र आचार्य भगवंत ने सोचा। | 130

12) ``उत्पत्ति, स्थिति और विनाश यह वस्तु मात्र का स्वभाव है ।''

श्रीकृष्ण ने नेमिनाथ प्रभु से कहा। | 240

13) ``पर की आशा अन्त में निराशा पैदा करती है ।''

आर्यरक्षित सूरिवर ने पिता सोमदेव मुनिसे | 157 कहा।

14) ``प्राण जाने से पूर्व कोई परोपकार का कार्य हो जाय तो अच्छा ही है ना ।''

युगबाहु ने नवयुवक (पवनवेग विद्याधर) से कहा | 107

15) ``लोहे के चने चबाना सरल है किन्तु संयम का पालन दुष्कर है ।''

आचार्य सुहस्ती ने अवंतिसुकुमाल से कहा | 22

प्र.2. रिक्त स्थानों की पूर्ति किजीये । 30 **30**

उदा. यतना यह साधु जीवन का अलंकार है । 134

1) अनेक लब्धिधर महामुनियों का भी अधोपतन इस रसना की आसक्ति के कारण हो चुका है । 295

2) बाह्य - तप की साधना भी कषायों के जय के लिए है । 279

3) उच्छृंखल शिष्यों के साथ रहना तो कर्मबंध का हेतु है । 193

4) ज्ञान को स्थिर करने के लिए उसका पुनरावर्तन अत्यंत जरुरी है । 159

5) जहाँ त्याग के लिए लड़ाई वहाँ रामराज्य और
जहाँ पाने के लिए लड़ाई वहाँ हरामराज्य ! 41

6) महाराजा ने उसके मौन में ... उसके आभ्यंतर
व्यक्तित्व के दर्शन किए । 12

7) व्यक्ति जब स्वार्थ के वशीभूत होकर क्रोधान्ध
बन जाता है, तब उसका कोई सगा नहीं रहता । 289

8) धन्यकुमार की कथनी और करणी में कोई
फर्क नहीं था । 24

9) भोग से विकारों का शमन नहीं, बल्की वृद्धि
ही होती है । 168

10) आहार मिले तो संयमवृद्धि और न मिले तो
तपोवृद्धि । 87

11) धर्मलाभ यह संसार का विच्छेद करानेवाला और मोक्ष
को प्राप्त करानेवाला मंगल आशीर्वाद है । 275

12) इष्ट वस्तु का वियोग सज्जनों के लिए
वैराग्य का कारण बनता है । 103

13) मरणांत परिषह को भी आपने
समतापूर्वक सहन कर लिया । 15

14) पुरुष का आभूषण लक्ष्मी है, लक्ष्मी
का भूषण सुपात्रदान है । 73

15) ब्रह्मचर्य गुण के कारण ही नारदजी मोक्ष में
जाते है । 197

प्र.3. निम्नोक्त गुण तथा दोष के धारक आत्माओं का नाम लिखिये । ◆ रिक्त अक्षरोंकी पूर्ति करें । **30**

30

उदा. समता=1. गजसुकुमाल 18 2. चिलातीपुत्र मुनि 99

1. मान = 1. गर्दभिल्ल 189 2. सागराचार्य 194
   3. सत्यभामा 198
2. ईर्ष्या = 1. धनदत्त 31 2. धनदेवी 26
   3. सत्यभामा 207
3. मोह = 1. चिलातीपुत्र 94
   2. गर्दभिल्ल 188 3. सामयिक 268
4. तप = 1. मुगबाहुमुनि 109
   2. उदायनमुनि 174
   3. विष्णुकुमारमहामुनि 264
5. द्वेष = 1. अमिपी 175 2. रुक्मि 206
   3. नमुचि 260
6. दया = 1. सत्यकी मुनि 215
   2. रुपसुंदरी 257 3. हाथी 285
7. कामांध = 1. मधुराजा 218
   2. कनकमाला 225 3. शांब 239
8. आसक्ति 1. इलाचीकुमार 93
   2. अचल 249 3. आषाढ़भूति 295
9. निदान 1. कुमारनंदी 169
   2. स्कन्दकाचार्य 292 3. अवंतिसुकुमाल 22
10. अभिगृह 1. बंकचूल 14
    2. दृढ़प्रहारी 276 3. मेघ मुनि 286

प्र.3. निम्नोक्त गुण तथा दोष के धारक आत्माओं का नाम लिखिये । ◆ रिक्त अक्षरोंकी पूर्ति करें । **30** 30

उदा. समता=1. गजसुकुमाल [18] 2. चिलातीपुत्र मुनि [99]

1. मान = 1. ग र्द भि ल्ल [189] 2. सा ग रा चा र्य [195]
   3. स त्य भा मा [206]
2. ईर्ष्या = 1. ध न द त्त [31] 2. ध न दे वी [26]
   3. स त्य भा मा [207]
3. मोह = 1. चि ला ती पु त्र [94]
   2. ग र्द भि ल्ल [188] 3. सा म यि क [268]
4. तप = 1. यु ग बा हु मु नि [100-109]
   2. उ दा य न रा जा [174]
   3. वि ष्णु कु मा र म हा मु नि [264]
5. द्वे ष = 1. अ भि ची [175] 2. रुक्मि [206]
   3. न मु चि [260]
6. द या = 1. स त्य की मु नि [215]
   2. रू प सुं द री [257] 3. हाथी [285]
7. का मां ध = 1. म धु रा जा [218]
   2. क न क मा ला [225] 3. शाम्ब [239]
8. आ स क्ति 1. इ ला ची कु मा र [90]
   2. अ च ल [249] 3. आ षा ढा भू ति [295]
9. नि दा न 1. कु मा र नं दी [169]
   2. स्क न्द का चा र्य [292] 3. अवंतिसुकुमाल [22]
10. अ भि ग्र ह 1. वं क चू ल [14]
    2. दृ ढ़ प्र हा री [276] 3. मेघ मुनि [286]

प्र.4. **निम्नोक्त शब्दो में से दो की जोडी बनाकर उनसे जुडा एक समान धागा अथवा संबंध ढूंढकर लिखिये ।** 20

केवलज्ञान, वज्रस्वामीजी, सरस्वती, नमुचि, दशपूर, आर्य सुहस्ति, चारित्रपर्याय, आर्यरक्षित सूरिवर, शालिभद्र, भद्रगुप्तसूरिजी, पुष्पचुला, राजा उदायन, राजा संप्रति, पालक, कुणाल, वंकचूल, मूलदेव, शारदा माँ, जितशत्रु, युगप्रधान, दीक्षा पर्याय, भद्रा माता, जैनद्वेषी, वसंतसेना, उदायन मुनि, सौवीर, पुरन्दर यशा, दशपूर्वधर, साध्वीजी, एक ही दिन, वज्रस्वामीजी, इलाचीमुनि, अवंति सुकुमाल ।

20

उदा. :– पुष्पचुला (8), वसंतसेना (8) → वंकचूल

◆ पुष्पचूला - वंकचूल की बहन, वसंतसेना-वंकचूल की पत्नी

1) दीक्षा पर्याय (15), चारित्र पर्याय (16) → एक ही दिन ✓

2) अवंति सुकुमाल (21), शालिभद्र (83) → भद्रा माता ✓

3) इलाची मुनि (90), उदायन मुनि (175) → केवलज्ञान ✓

4) कुणाल (114), आर्य सुहस्ति (115) → राजा संप्रति ✓

5) शारदा माँ (104), साध्वीजी (187) → सरस्वती ✓

6) दशपुर (120), सौवीर (168) → राजा उदायन ✓

7) वज्रस्वामीजी (131), आर्यरक्षित सूरिवर (166) → युगप्रधान ✓

8) वज्रस्वामीजी (136), भद्रगुप्तसूरिजी (137) → दशपूर्वधर ✓

9) नमुचि (260), पालक (287) → जैनद्वेषी ✓

10) मूलदेव (256), पुरन्दरयशा (288) → जितशत्रु ✓

प्र.5. पहेली सुलझाइऐ । **20**

- **जबाब एक से जादा हो सकते है ।**
- **सभी सांकेतिक शब्दों के नाम पृष्ठ. क्र. सहीत लिखिये ।**

उदा. एक आचार्य का पुत्र, जिसके नाम में कोई मात्रा नहीं है । 20

उत्तर शय्यंभव आचार्य 181 मनक 180

1) संयम लेने के बाद विवाह हुआ ।
आर्द्रमुनि (269) अषाढ़ाभूति (298)

2) माँ के नाम से पुत्र प्रख्यात हुआ ।
चिलाती (96) चिलातीपुत्र (96)

3) पिता और पालक पिता नें पुत्र का समान नाम रखा ।
श्रीकृष्ण (209) कालसंवर (210) प्रद्युम्नकुमार (209/210)

4) पिता के पास ही पुत्र ने दीक्षा ली ।
विक्रमबाहु - युगबाहु (109) शय्यंभवसूरिजी - मनक (181)

5) योग्य शिष्य, जिनका नाम काया की स्थिति का वर्णन करता है ।
पुष्यमित्र (159) दुर्बलिका पुष्यमित्र (159)

6) मोक्षगामी आत्मा की पूर्व भव की पत्नी, जो दूसरे भव में माता रुप बनी ।
प्रद्युम्नकुमार (196) इन्दुप्रभा (226) कनकमाला (226)

7) भाई-बहन के नाम में केवल 'आ' की मात्रा का अंतर है ।
पुष्पचूल - पुष्पचूला (5)

8) दो मुनियों के नाम, जिनके 4 अक्षर क्रम से समान है ।
गजसुकुमाल (17) अवंतिसुकुमाल (21)

9) राजा बनने के बाद दूसरा नाम रखा गया ।
मूलदेव (253) विक्रमराज (253)

10) एकही शब्द के एक ही वाक्य में 2 अलग अर्थ दिये है । केवल शब्द ।
कर (202) अज (214)

प्र.6.A. सर्वप्रथम आर्यरक्षित और उनसे जुडी घटनाओं कों क्रम से लिखिये । • संबंधित व्यक्ती का नाम लिखिये । 20

उदा.1) 14 विद्याओं में पारगामी बने = पण्डितवर्य आर्यरक्षित । 119

1) गुरुदेव नें आर्यरक्षित को हृदय से आशीर्वाद दिये ।
2) विनम्र और माँ का आज्ञाकारी पुत्र था ।
3) मुनिवर को निर्यामक बनने के लिए आग्रह किया । 20
4) उनकी आत्मा परमात्म ध्यान में मग्न थी ।
5) उन्होंने निगोद में रहे हुए जीव के स्वरूप का वर्णन किया ।
6) सूरिवर का एक शिष्य अत्यंत मेधावी था ।
7) अपने पुत्र के दर्शन के लिए अत्यंत उतावली बनी थी ।
8) उनको गोचरी का आमंत्रण नहीं दिया ।
9) उनकी हर प्रवृत्ति में नम्रता के दर्शन होने लगे ।
10) भौतिक देह का त्याग कर वे अनन्त की यात्रा में विलीन हो गए ।

1 उनकी हर प्रवृत्ति में आत्मा के दर्शन होने लगे । आर्यरक्षित मुनिवर 135

2 मुनिवर को निर्यामक बनने के लिए आग्रह किया । आचार्यप्रवर श्री भद्रगुप्त सूरिजी ने 138

3 विनम्र और माँ का आज्ञाकारी पुत्र था । फल्गुरक्षित । 144

4 गुरुदेव ने आर्यरक्षित को हृदय से आशीर्वाद दिये । = तोसलीपुत्र आचार्य भगवंत 149

5 भौतिक देह का त्याग कर वे अनन्त की यात्रा में विलीन हो गए = तोसलीपुत्र आचार्य भगवंत । 151

6 अपने पुत्र के दर्शन के लिए अत्यंत उतावली बनी थी । = मां रूद्रसोमा । 152

7 उनको गोचरी का आमंत्रण नहीं दिया = सोमदेव मुनि को 157

8 सूरिवर का एक शिष्य अत्यंत मेधावी था । = विंध्य । 161

9 उन्होंने निगोद में रहे हुए जीव के स्वरूप का वर्णन किया । = सीमन्धर स्वामी भगवंत । 163

10 उनकी आत्मा परमात्म ध्यान में मग्न थी । = आर्य रक्षित सूरिवर । 166

प्र.6.B. संक्षेप में उत्तर दिजिये ।

1) धन्य के कौन कौनसे स्वजनों ने दीक्षा ली । रिश्ते के साथ नाम लिखिये । पृ.क्र. सहित लिखे ।

आठ पत्नियाँ - कुसुमश्री (49) सोमश्री (50) सुभद्रा (52) सौभाग्य-मंजरी (55) गीतकला (67) सरस्वती (69) लक्ष्मीवती (71) गुणमालिनी (77) धनसार - पिता (83) शालिभद्र - साला (86) धनदेव, धनदत्त, धनचंद्र - भाई (26) गोभद्रसेठ - श्वसुर (52)

2) धन्यकुमार और उनके भाइयों को दान का वास्तविक फल किस रुप में मिला ?

धन्यकुमार को मुनिदान के प्रभव से अमाप संपत्ति की प्राप्ति हुई। लेकिन उनके भाइयों ने दान देकर भी चार बार पश्चात्ताप किया। पश्चात्ताप के फलस्वरूप वे अपने दान के वास्तविक फल को हार गए। लक्ष्मी मिलने पर भी वे निर्धन बने रहे। 82

3) शालिभद्र ने किस रूप में दिव्य सुखों का अनुभव किया ।

शालिभद्र ने तो चक्रवर्ती से भी बढ़कर दिव्य सुखों का अनुभव किया। सुवर्ण व रत्नो के आभूषणों को निर्माल्य समझकर दूसरे दिन उसका उपभोग नहीं करना। दिव्य सुखों का मोह उतारकर अंत में समाधिपूर्वक कालधर्म प्राप्त कर सर्वार्थसिद्ध विमान में 33 सागरोपम की आयुष्य वाले देव बने। 88-89

20

प्र.7. उत्तर लिखिये । 20

A) ऐसा नाम क्यों पडा ? कारण लिखिये ।

1) कुरगडु मुनि

घडा भर कर भात वहोरने के कारण लोगों में उनका नाम पड़ गया। कुर अर्थात चावल, गडु अर्थात घडे जैसा पात्र 280

2) मनक =

गर्भकाल दरम्यान माता ने जो "मणयं" शब्द का प्रयोग किया था। उसके अनुसार उस बालक का नाम "मनक" पड़ा। 180

3) प्रद्युम्न कुमार =

अश्विनीकुमार है या सूर्यबिंब ? इसने तो अपने तेज से सभी दिशाओं को प्रकाशित कर दिया है, इस कारण बालक का नाम "प्रद्युम्नकुमार" रखा। 209

4) दृढ़प्रहारी =
अत्यंत निर्दयता तथा दृढ़ता से निरपराध प्राणियों पर प्रहार करने के कारण 'दृढ़प्रहारी' के नाम से चारों ओर प्रसिद्ध हो गये। 274

B) 4 तीर्थंकर तथा उनके आगमन से पावन 4 नगरीयों के नाम लिखिये। नाम रिपिट ना करे। (पृष्ट क्रमांक सहीत)

नेमिनाथ प्रभु - द्वारिका नगरी - (17
महावीर प्रभु - राजगृही नगरी - (86
श्री सीमंधरस्वामी - पुंडरीकिणी नगरी - (212
भगवान मुनिसुव्रतस्वामी - श्रावस्ती नगरी - (288

C) एक ही नाम किंतु अलग अलग व्यक्ति, ऐसे 4 राजा और उनकी नगरीयों के नाम लिखिए। (पृष्ट क्रमांक सहीत)

जितशत्रु राजा — प्रतिष्ठानपुर नगर 26
जितशत्रु राजा — नरसिमणी नगरी 184
जितशत्रु राजा — गौड़देश में पाटलीपुर नगर 246
जितशत्रु राजा — श्रावस्ती नगरी 288

D) वंकचूल के 4 नियम संक्षेप में लिखिये।

(i) किसी की भी हिंसा न करे, परंतु यह तेरे लिए शक्य न हो, तो किसी की हिंसा के पूर्व एक बार सात कदम पीछे हट जाना।
(ii) सात्विक आहार ग्रहण करे, परंतु यह शक्य न हो तो अज्ञात फल का त्याग कर दे।
(iii) पवित्र जीवन व्यतीत करे, परंतु इतना शक्य न हो तो कम-से-कम राजा की रानी के साथ दुराचार का त्याग करना।
(iv) तुम सर्वथा मांसाहार का त्याग करो, परंतु यदि यह शक्य न हो, तो कम-से-कम कौए के मांस का त्याग कर दे।
गुरुदेव ने वंकचूल को ये चार नियम प्रदान किए -

7

प्र.8.A. योगी और भोगी की तुलना करे । 10 10

1) योगी ज्ञान में आसक्त होता है।	भोगी भोग मे आसक्त होता है।
2) योगी को शास्त्र अध्ययन अध्यापन के बल से नए नए ज्ञान प्राप्ति होने पर भी उसकी ज्ञान-पिपासा बढ़ती जाती है	भोगी के भोग के साधन कितने ही मिल जाये वह सदा ही अतृप्त ही रहता है।
3) योगियों का शरीर ज्ञान प्राप्ति के लिए होता है।	3) भोगीयों का शरीर भोग और भोग के साधनों की प्राप्ति के लिए होता है।
4) योगियों को हंस की उपमा दी गयी है।	भोगियो को विष्ठा मे आलोटने वाले सूअर की उपमा दी गयी है
5) सम्यग ज्ञान की साधना का आनंद योगी ही ले सकता है।	सम्यग ज्ञान की साधना का आनंद भोगी नहीं ले सकता। 142-143

B. आर्य महागिरि और आर्य सुहस्ती की समानता लिखे ।

...और साधना की प्राप्ति के लिए लालायित बना रहता है।

118
142/143

B. आर्य महागिरि और आर्य सुहस्ती की समानता लिखे।

* आर्य महागीरि और आर्य सुहस्ती दोनों का बाल्यकाल में पालन-पालन आर्या यक्षा साध्वीजी के सानिध्य में हुआ था, इस कारण उनके नाम के आगे आर्य शब्द लगा।
* दोनो ने 30 वर्ष की उम्र में दीक्षा अंगीकार की थी।
* दोनो स्थूलभद्रस्वामी के प्रधान शिष्य थे।
* दोनो दशपूर्वी थे।
* आर्य महागीरी और आर्य सुहस्ती दोनो पृथ्वीतल पर विचरण कर अनेक भव्यजीवों को प्रतिबोध देते थे।
* दोनो आचार्य भगवन्त जीवंतस्वामी की रथयात्रा हेतु अवान्ति नगरी में पधारे।
* दोनो संप्रति राजा के शासनकाल मे हुए।
* दोनों पट्टधर आचार्य थे एवं प्रभु वीर की पाट-परम्परा को आगे बढाया।

111-112

10

प्र.9.A. क्रोध का संक्षिप्त वर्णन करे । 10

क्रोध कषाय अग्नि से भी भयंकर है। अग्नि की लपटें तो बाहर दिखाई देती हैं, अतः उसे पहचान सकते हैं, परंतु क्रोध की लपटें प्रत्यक्ष दिखाई नहीं देती हैं, व्यक्ति भीतर ही भीतर जलता है। अग्नि तो अपने उत्पत्ति स्थल को ही जलाती है, जबकि क्रोधाग्नि आसपास के वातावरण को भी संतप्त कर देती है, जिस प्रकार शरीर में उत्पन्न हुए छोटे से घाव की उपेक्षा करने से वह घाव बड़ा होकर पूरे शरीर को बिगाड़ देता है; वन के एक भाग में उत्पन्न अग्नि की एक चिनगारी जैसे समस्त वन को जलाकर भस्मीभूत कर देती है, उसी प्रकार क्रोध की आग भी आत्मा के गुण रूपी बाग को जलाकर समाप्त कर देती है। क्रोधान्ध व्यक्ति के विवेक चक्षु पर आवरण आ जाता है। उसकी दीर्घदर्शिता लुप्त हो जाती है। उसकी विचारशक्ति समाप्त हो जाती है और वह अनर्थकारी काम कर डालता है। क्रोधी व्यक्ति अपने दिल को तो जलाता ही है, अन्य के दिल को भी जला देता है। स्व-पर उभय को संताप देता है। 287

B. भरहेसर सज्झाय का महत्व समझाइये ।

भरहेसर की सज्झाय में महासत्वशाली महापुरुष और शीलवती महासतियों का नाम निर्देश किया गया है। उन महापुरुष और महासतियों के जीवन चरित्र पढ़ने से हमें बहुत कुछ प्रेरणाएँ मिल जाती हैं। इन चरित्रों से हमें सहनशीलता की प्रेरणा मिलती है, कष्टों को हँसते मुँह सहने की प्रेरणा मिलती है, रोगादि परिषहों को समतापूर्वक सहन करने की प्रेरणा मिलती है- भौतिक सुखों में अनासक्ति भाव रखने की प्रेरणा मिलती है। प्रत्येक चरित्र हमें कुछ नई-नई प्रेरणाएँ देता रहता है, जिनके स्वाध्याय से हमारे जीवन में रहे दोषों का ह्रास होता है। तो नवीन गुणों का विकास भी होता है। तारक तीर्थंकर परमात्मा भी श्रोताओं को उपदेश देने के लिए चरित्र-ग्रंथों का अवलंबन लेते हैं। ये चरित्र ग्रंथ हमारी सुषुप्त चेतना को जागृत किए बिना नहीं रहते हैं। पूर्वाचार्यो द्वारा विरचित 13 गाथाओं की इस सज्झाय में महापुरुष और महासतियों का सिर्फ नाम निर्देश किया है किंतु उनके नामस्मरण में भी अपूर्व शक्ति रही हुई है। सज्झाय में ठीक ही कहा- जेसिं नामग्गहणे, पावप्पबंधा विलयं जंति- जिन महापुरुषों के नामग्रहण मात्र से ही आत्मा के ऊपर लगे हुए कर्मों के जटिल बंधन शिथिल होने लगते हैं। IV